भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान बिहार में अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन

राकेश रंजन

अस्पृश्यता उन्मूलन आन्दोलन को कई स्थानों पर कट्टर स्वर्णों के विरोध का भी सामना करना पड़ा। वे दलितों को मानसिक रूप से प्रताड़ित तो करते ही थे, उन्हें डराते और धमकाते भी थे। इस उन्मूलन कार्यक्रमों के दौर में भी शुद्धि समारोह भी हो रहे थे।

बिहार में भी अस्पृश्यता निवारण आन्दोलन गति पकड़ रही थी। खासकर आर्य समाज कांग्रेस और हिन्दु सभा के नेताओं के नेतृत्त्व में आगे बढ़ रही थी। 1931 के गोलमेज सम्मेलन के दौरान सरकार अछूत जातियों की एक सूची तैयार की। जिसे 1935 मे अधिनियम में अनुसूचित जाति अथवा दलित वर्ग कहा गया। इस सूची में वैसी जातियों को भी शामिल किया गया था, जिनको सरकार आपराधिक पृष्ठभूमि की मानती थी। इस वर्ग के लोग जमीन्दारी अत्याचार को तो सहते ही थे, सरकार भी इन्हें द क्रिमिनल टाईल्स एक्ट बनाकर पुलिस द्वारा प्रताड़ित करती थी। इस कोटि की जातियों में दूसाध, मगहिया डोम, बंसफोड़वा डोम, डोम, रजवार, मुशहर आदि थे। इस प्रकार दलितों का शोषण चलता रहा। कभी सरकार द्वारा जमीन्दारों को खुश करने के लिए तो कभी स्वयं के फायदे के लिए।